विपश्यना

[साधकों का मासिक प्रेरणापत्र]

रजि. नं. १९१५६/७१ पोस्टल रजि. नं. (M) NS (C) 36

वर्ष १० • बम्बई • बुद्धवर्ष २५२४ • पौष पूर्णिमा [शक] • दि. २०-१-१९८१ • अंक ८

कृतज्ञ हूँ !

परम आदरणीय गुरुदेव !

आपको शरीर छोड़े १० वर्ष पूरे हुए। लेकिन आपका मंगलमय सान्निध्य अब भी महसूस होते रहता है। धर्मका सान्निध्य है तो आपका सान्निध्य है ही। धर्मका सान्निध्य बना रहे ताकि आपका मंगलमय सान्निध्य बना रहे। यही शिव-संकल्प है।

कितना मंगलमय है आपका सान्निध्य ! धर्मका सान्निध्य ! जब-जब धर्म-सान्निध्य होता है तब-तब आपकी असीम करुणाका स्मरण हो आता है और मन कृतज्ञता व रोमांच-पुलकसे भर उठता है।

मन कृतज्ञतासे भर उठता है उन भगवान सम्यक् संबुद्ध साक्यमुनि गौतमके प्रति जिन्होंने असंख्य जन्मों तक साधनामय जीवन जीते हुए दसों पुण्य-पारमिताओंको परिपूर्ण किया जिससे कि न केवल अपनी स्वस्ति-मुक्ति साध सके, बल्कि अनेकोंकी स्वस्ति-मुक्तिका कारण बने। ऐसी कल्याणकारी विद्या खोज निकाली जिसे कि जीवन भर करुणचित्तसे मुक्तहस्त बांटते रहे, जिससे अगणित लोगोंका मंगल सधा

और कृतज्ञतासे मन भर उठता है उन जीवनमुक्त अर्हन्तोंके प्रति जिन्होंने कि यह कल्याणकारी विद्या भगवानसे प्राप्त कर "चरथ भिक्खवे चारिकं, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकानु-कम्पाय" के मंगल आदेशको शिरोधार्य कर गांव-गांव, नगर-नगर जनपद-जनपद इस मुक्तिदायिनी विद्याको बांटनेमें अपना जीवन लगा दिया।

और कृतज्ञतासे मन भर उठता है उन सभी सत्पुरुषोंके प्रति जिन्होंने कि इस पावन धर्म-गंगाको अनेक पीढ़ियों तक प्रवाहमान रखा।

कृतज्ञतासे मन भर उठता है उन अर्हत् सोण और उत्तर के प्रति जो कि विदेश-यात्राके सभी संकटोंको झेलते हुए भागीरथकी तरह इस धर्मगंगाको स्वर्णभूमि ले गए और अगणित प्यासोंकी प्यास बुझाई।

और कृतज्ञतासे मन भर उठता है उन परंपरागत धर्म-आचार्योंके प्रति जिन्होंने कि ब्रह्मदेशमें गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा इस विद्याको पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने शुद्ध रूपमें कायम रखा। इसमें शब्दोंका, रंग-रूपका, आकृति, कल्पनाओं आदिका सम्मिश्रण नहीं होने दिया। जो पथ स्थूल भासमान सत्यका भेदन करता हुआ सूक्ष्मतम परम सत्यकी ओर ले जानेवाला राजपथ है, उसे एक स्थूल भासमान सत्यसे दूसरे स्थूल भासमान सत्यकी ओर ले जानेवाली अंधी गली नहीं बनाया। शुद्ध रूपमें रखा तो ही हमें शुद्ध रूपमें यह विद्या प्राप्त हुई।

और कृतज्ञतासे मन भर उठता है इस पुनीत आचार्य-परंपराके पिछली सदीके ज्वाज्वल्यमान नक्षत्र लेही सयाडोके प्रति और सद्गृहस्थ आचार्य सयातहजीके प्रति जिन्होंने कि इस उत्तर-दायित्वको कितने आदर्शरूपसे निभाया।

और कृतज्ञतासे मन भर उठता है, गुरुदेव ! आपके प्रति जो इतने करुणचित्तसे इस अनमोल धर्मरत्नका दान दिया। यदि यह धर्मरत्न न पाता तो क्या दशा होती ? धन-दौलतके संचय-संग्रह और सामाजिक पद-प्रतिष्ठाकी होड़-दौड़में ही जीवन खो देता। धर्मकी ओर झुकाव होता भी तो किसी संप्रदायकी बेड़ियोंको ही आभूषण माने रहता। परायी अनुभूतियों के गर्व-गुमानमें ही जीवन बिता देता। सत्य-धर्मकी प्रत्यक्षानुभूतिवाला यह सम्यक्-दर्शन कहाँ उपलब्ध होता ? कल्पनाओंको ही सम्यक्-दर्शन मानकर संतुष्ट हो लेता। यथाभूत दर्शन द्वारा सम्यक् ज्ञान कहाँ उपलब्ध होता ? बौद्धिक ऊहापोहको ही सम्यक् ज्ञान मानकर जीवन खो देता। कर्मकांड, पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन अथवा स्वानुभूति-विहीन मत-मतांतरीय दार्शनिक मान्यताओंकी जकड़नमें अनमोल मनुष्य जीवन गंवा देता। आपने यह अनुत्तर-अनुपम धर्मदान देकर मानव-जीवन सफल कर दिया गुरुदेव !

धम्म वाणी

असेवना च बालानं, पण्डितानञ्च सेवना,
पूजा च पूजनेय्यानं, एतं मंगलमुत्तमं ॥

मंगल सुत्त ॥ १ ॥

दुर्जनोंकी संगतिसे बचना, संतोंकी संगति करना और पूजनीय गुरुजनोंका पूजन-वंदन करना, ये उत्तम मंगल हैं।

सचमुच, अनुत्तर-अनुपम ही है यह धर्म-साधना! कितनी ऋजु, कितनी स्पष्ट, कितनी वैज्ञानिक, कितनी मांगलिक! बंधनसे मुक्तिकी ओर ले जानेवाली, माया-मरीचिकासे निर्भ्रांतिकी ओर ले जानेवाली! भासमान प्रकट सत्यसे परमसत्यकी ओर ले जानेवाली! ऐसी अनमोल निधिकी निर्मलता अपने शुद्ध-रूपमें कायय रहे, आजके इस पुण्य-दिवस पर यही शिव-संकल्प है। कहीं किसी प्रकारके सम्मिश्रणकी भूलका हिमालय जैसा बड़ा अपराध न हो जाय! यह अनमोल निधि अपने निष्कलुषरूपमें कायम रहे और इसके अभ्यास द्वारा जन-जनकी मुक्तिके लिए अमृतका द्वार खुले, इसीमें आपका सही पूजन-वंदन, आदर-सम्मान समाया हुआ है।

विनीत धर्मपुत्र,

दि. १९-१-८१ स. ना. गो.

व्यसन-विमुक्ति

पिछले १२ वर्षों के प्रयोग द्वारा यह बात बहुत स्पष्ट सिद्ध हुई है कि विपश्यना के अभ्यास द्वारा अन्य अनेक लौकिक और पार-लौकिक लाभोंके अतिरिक्त व्यसनोंसे मुक्तिका बहुत महत्वपूर्ण लाभ होता है। मानव समाजके लिए नशे-पत्तेका व्यसन बहुत बड़ा अभिशाप है। इससे वैयक्तिक जीवन तो नारकीय हो ही जाता है, पारिवारिक और सामाजिक जीवन भी यातनाओंसे भर उठता है। पश्चिम देशोंकी नई पीढ़ी इस व्यसनकी बुरी तरह शिकार हुई और अपने लिए ही नहीं बल्कि अपने समाज व राष्ट्रके लिए एक बड़ी चिंताका कारण बन गई। नशा केवल मदिरा तक ही सीमित नहीं रहा। इसके अनेक प्रबल पैशाचिक रूप उभरने लगे। सभी देशोंके समझदार लोग नई पीढ़ीको इस भयानक रोगसे मुक्ति दिलानेके लिए आतुर हो उठे।

आस्ट्रेलियाके पर्थ नगरका एक धनी व्यक्ति रिचार्ड हॅमर्सली भी इस दिशामें अत्यंत चिंतित हुआ। क्योंकि उसकी पाँच संतानोंमें से वयस्क हुए तीन—एक पुत्र व दो पुत्रियाँ बुरी तरह व्यसनके गुलाम हो चुके थे। उन्हें व्यसन-मुक्त करनेके हर प्रयोगमें वह निष्फल रहा। उनकी हालत दिनो-दिन बिगड़ती गई। अपने बच्चोंकी यह दयनीय हालत देखकर उसका पितृ-हृदय कराह उठता था। पर लाचारी थी। उसने अनेक मनोचिकित्सकोंकी सहायता ली, जिन्होंने कि कई प्रकारके प्रयोग अनेक लोगों पर किए थे। उनके प्रयोग कुछ लोगों पर थोड़ा-बहुत अच्छा असर लाते परन्तु व्यसनकी पराकाष्ठा पर पहुंची हुई इसकी संतानको कोई लाभ नहीं हुआ। उसने देखा कि इस मामलेमें केवल वही दुखी नहीं है बल्कि अनेक माता-पिता अपनी संतानको सुधारनेके लिए चिंतित हैं। पर उन्हें कोई राह नहीं सूझ रहा। सरकार भी चिंतित है पर कोई संतोषजनक हल नहीं मिल रहा। इस व्यक्तिने पहल करके समाजके अन्य लोगोंका तथा सरकारका सहयोग लिया और बहुत सा धन लगाकर एक मनोवैज्ञानिक शोध-केन्द्र की स्थापना की, जिससे इस दिशामें कोई ठोस काम हो सके। इस संस्था ने अपने तरीकेसे कुछ काम शुरू किया। कुछ लोग जो व्यसनके प्रारंभिक दौरमें थे उन्हें लाभ भी हुआ परन्तु इसके बच्चोंको इससे भी कोई लाभ न हो सका।

संयोगसे हिप्पी बना घूमता इसका बड़ा लड़का क्रिस जो कि पेशेसे स्वयं एक डॉक्टर है, भारत आ गया और किसीसे विपश्यनाके बारे में सुनकर शिविरमें चले आया। पहले शिविरमें ही मेहनतसे काम करता गया और सुखद परिणाम देखकर धर्मके प्रति आकर्षित हुआ। अन्य दो-तीन शिविरोंमें सम्मिलित होकर विपुल धर्मलाभ प्राप्त कर धन्य हुआ। अब वह नशे-पतेके व्यसनसे पूरी तरह मुक्त हो चुका था। नशा छूटा तो अन्य अनेक सुधार हुए। माँ-बाप याद आने लगे तो घर लौट गया। अत्यंत सुधरी हुई अवस्थामें लौटा तो माता-पिताको जैसे बहुत बड़ी अमूल्य निधि मिल गई। बड़े प्रसन्न हुए और इस बदलावका कारण "विपश्यना साधना" जानकर उसके प्रति अत्यंत आकर्षित हुए। धीरे-धीरे पुत्रके सुधरे हुए चाल-ढाल, बर्ताव-व्यहारको देखकर उनका वात्सल्य प्रेम श्रद्धामें परिवर्तित होने लगा। अपने हरप्रकारके सुधारक प्रयत्नमें असफल रिचार्ड को मात्र साधनाके अभ्याससे क्रिस में आए इस अद्‌भुत परिवर्तनकी बात बड़ी अजीब सी लगी। परन्तु प्रत्यक्ष प्रमाणको झुठलाया नहीं जा सकता था। अतः सारे परिवारके साथ किसी शिविरमें सम्मिलित होनेकी मनमें तीव्र उत्कंठा जाग उठी। विशेषकर अपनी उन दो युवा पुत्रियोंको उनकी पतनोन्मुख अवस्थासे बाहर निकालनेकी आतुरता तीव्र हो उठी। परन्तु अनेक कारणोंसे सबके साथ भारत आ नहीं सकता था। अतः आस्ट्रेलियामें ही शिविर लगवानेकी बात सोचने लगा। अन्ततः जब सुना कि पू. गुरूजीने उसके देश और शहरमें शिविर लगानेकी स्वीकृति दे दी है तो अत्यंत प्रसन्न हो उठा। बड़ी अधीरताके साथ भावी शिविरकी तिथियाँ गिनने लगा।

धीरे-धीरे शिविरका समय समीप आया। पुत्र एवं दोनों पुत्रियों सहित शिविरमें सम्मिलित होनेके लिए कृतसंकल्प था। परन्तु यकायक सिर पर बिजली टूट पड़ी। जिस दिन शामको शिविर लगनेवाला था उसकी पिछली रात उसकी छोटी वयस्क पुत्री व्यसनसे व्याकुल किसी तीव्र नशीले पदार्थकी खोजमें घरसे भाग निकली और कहीं नाविकोंके एक समूहमें उसे अपनी इच्छानुसार मादक पदार्थ मिल गया। वहाँ इसने उस नशीले पदार्थका क्षमतासे अधिक मात्रामें सेवन कर लिया और परिणामतः भोर होनेके पहले अपने प्राण गंवा बैठी। सुबह उस लड़कीका शव घर लाया गया। सारा परिवार शोकके अथाह सागरमें डूब गया। बापके शोककी कोई सीमा न थी। जो व्यक्ति समाजके व्यसनग्रस्त युवक-युवतियोंको व्यसनमुक्त करनेके लिए इतना बड़ा सक्रिय काम कर रहा है उसकी अपनी लाडली बेटी भरी जवानीमें व्यसनके दुष्परिणाम से उसके सामने मृत पड़ी है। और वह असहाय है।

एक और दुविधा थी। अपनी प्यारी पुत्रीकी 'लाश' दो-तीन दिन तक घरमें रखनी होगी। सभी सगे-संबंधी व परिचित-मित्र शोक-संवेदना प्रदर्शनार्थ आते रहेंगे। इस औपचारिकताके बाद ही उसे दफनाया जायेगा। ऐसी सामाजिक परंपरा है। दूसरी ओर आज शामको ही साधनाका शिविर आरंभ होनेवाला है जिसकी कि इतने दिनोंसे आश लगाए बैठा था और जिसके अभावमें अपनी एक संतान खो बैठा था। उस धर्म-साधना का अवसर कैसे खोए! एक ओर मनमें प्रबल धर्म-संवेग है कि शिविरमें तो सम्मिलित होना ही

चाहिए। पता नहीं ऐसा अवसर फिर कब आए! आए भी या नहीं! दूसरी ओर शिविरमें जानेसे जग-हँसाई होगी। लोग कहेंगे कि बेटीकी लाश घरमें पड़ी है और बाप साधना करने गया है। विचित्र दुरभिसंधि थी। क्या करे, क्या न करे? यह तुमुल अन्तर्द्वन्द लिए हुए वह अपने पुत्र व बड़ी पुत्रीके साथ साधना-स्थल पर पू. गुरूजीसे मिलने चले आया। गुरूजी भी उसी रात वहाँ पहुँचे थे। अतः शिविर आरंभ होनेके पहले दोपहरमें ही अश्रुपूरित नेत्रोंसे तीनों पू. गुरूजीसे मिल सके। उनका अन्तर्द्वन्द कोई भी आसानीसे समझ सकता था। सारी बात सुनकर थोड़ी देर तक मैत्री देनेके बाद पू. गुरूजीने समझाया कि मृतकको तो अब जीवित किया नहीं जा सकता परन्तु जो बेटी जीवित है और गलत रास्ते पर है उसकी सुरक्षा करना सामाजिक प्रतिष्ठा व लोकोपचारसे कहीं अधिक आवश्यक बात है। बेटी बापके बिना अकेली शिविरमें बैठनेके लिए तैयार नहीं थी। गुरूजी के साथ कई देर तक सभी पहलुओं पर चर्चा करनेके बाद अन्ततः वह अपनी बड़ी पुत्रीके साथ शिविरमें सम्मिलित होनेका निर्णय करके वहीं रुक गया और अन्य औपचारिकताओंके लिए साधनामें पहलेसे पुष्ट हुए पुत्र क्रिसको घर भेज दिया। क्रिस ने अपने पिताको आश्वासन दिया कि अपनी माताके साथ मिलकर वह सारी औपचारिक बातें पूरी कर लेगा। यह दोनों निश्चिंत होकर शिविरका लाभ लें।

जहाँ एक ओर पिता रिचार्ड इतने बड़े अन्तर्द्वन्दसे पीड़ित था वहाँ दूसरी ओर बेटी एन्ड्रिया छोटी बहनकी अकाल मृत्यु के संतापसे तो विचलित थी ही, एक और कठिनाई भी साथ लेकर आयी थी। उसीकी भांति नशे-पतेका गुलाम उसका प्रेमी पिछले दिनों मादक द्रव्योंके अवैध व्यवसायमें पकड़ा गया था। उसका मुकदमा चल रहा था। दो-चार दिनमें न्यायालयका फैसला उसके विरुद्धमें होने वाला था। उसे कमसे कम ६ मासका कठोर कारावास दंड मिलने वाला था। ऐसे समय वह अपने प्रेमीके पास रहना चाहती थी। और इसीलिए बार-बार शिविरसे भाग जानेके लिए आतुर हो उठती थी। दोनोंको ही पूरे शिविरकी अवधि पर्यंत संभाले रखना अपने आपमें एक बड़ी चुनौती थी जिसका मुकाबला पू. गुरूजीको करना था। उन्हें समझाने-बुझानेके लिए उन्हें हर समय तैयार रहना पड़ता और समय देना पड़ता था। सांत्वनाके दो शब्द इन दुखियारोंके उत्साह बढ़ाते और पुनः काम करनेकी प्रेरणा देते; इस प्रकार वे फिर साधनारत हो जाते।

शिविरके दूसरे दिन रिचार्डके मनमें तूफानका एक तीव्र झोंका आया। वह आकर कहने लगा कि आज बेटीकी लाश दफनानेका दिन है। हमारी परंपराके अनुसार लाश दफनाते समय जब तक हम कब्र पर अपने हाथसे मिट्टी डालकर "गुड-बाई" नहीं कह लेते, तब तक उस व्यक्तिसे संपर्क बना ही रहता है। अतः आप इतनी छूट दें कि मैं अंतिम संस्कारमें सम्मिलित होकर थोड़ी देरमें वापस आ जाऊँ। पू. गुरूजी जानते थे शिविर-स्थलसे बाहर जाते ही बहुत बड़ी बाधा उपस्थित होगी। अतः न जाना ही उचित है। बड़ी कठिनाईसे उसके भावावेशको दूर करते हुए समझा पाए कि सत्य धर्मके अभ्यासके मुकाबले और सभी कर्मकांड थोथे हैं। यहाँ रहकर मन शुद्ध करके निर्मल चित्तसे अपनी मंगल मैत्री भेज सकोगे तो तुम्हारा और मृतक का दोनोंका कल्याण होगा। बात समझमें आ गई और अन्ततः दोनों शिविर पूरा करके ही घर लौटे। बीच-बीचमें नित्य-प्रति वह कुछ देर पू. गुरूजीसे चर्चा करते। उस समय उनके मनमें उठे द्वन्द थोड़ी देरकी धर्म-चर्चासे शांत हो जाते। गुरूजी कभी किसा गौतमीकी कथा सुनाते तो कभी पटाचारा की। भिन्न-भिन्न प्रकारसे प्रेरणा जगाते जिसके कारण वे फिर काममें लग जाते। ७ वें-८ वें दिन जाकर जब साधनाकी गहराईमें पहुँचकर मनके विकारोंको ठीकसे देखना आ गया तो इन द्वन्दोंसे छुटकारा मिला और अन्ततः प्रसन्नचित्त होकर घर लौटे।

दोनों ही क्रिसके प्रति कृतज्ञ थे जिसकी वजहसे धर्म पाकर ये धन्य हुए। रिचार्डने पाया कि उसे केवल सद्यः उत्पन्न शोकके संतापसे ही मुक्ति नहीं मिली बल्कि उसके समान अनेक दुखियारे माता-पिताओंकी समस्याके समाधानकी एक बलवती आशा मिल गई। सचमुच, धर्मका बल महान है!

—सम्पादक

वार्षिक शुल्क-सूचना

हिसाबकी सुविधाके लिए "विपश्यना" पत्रिकाका वार्षिक शुल्क-वर्ष जनवरीसे दिसम्बर तकका निश्चित किया हुआ है। इस प्रकार वार्षिक शुल्क जमा करनेवालोंका शुल्क गत दिसम्बर महीनेमें समाप्त हो गया। नए वर्षके लिए अपना शुल्क (रु. ५/-) नीचे लिखे पते पर **इगतपुरी ही भेजें**, बम्बईके पते पर कदापि नहीं :-

व्यवस्थापक, विपश्यना विश्व विद्यापीठ, धम्मगिरि,
इगतपुरी-४२२४०३ (नासिक)

शुल्क भेजते समय अथवा पता बदलने या सुधारनेके लिए या पत्रिका संबंधी किसी अन्य पत्राचारके समय अपनी ग्राहक-संख्या (जो कि पत्रिका पर चिपकाए पतेके ऊपर आपके नामसे पहले लिखी रहती है।) लिखनी न भूलें। अन्यथा मनीआर्डर वापस लौट सकता है और पत्रके अनुसार कोई अन्य कार्यवाही करनी भी असंभव होगी।

फिलहाल पत्रिका केवल साधकोंको ही भेजनेकी व्यवस्था है। अतः जो विपश्यना के किसी शिविरमें नहीं सम्मिलित हुए हैं वे कृपया अपना शुल्क नहीं भेजें।

जिन्होंने नवम्बर/दिसम्बरमें पहली बार शुल्क जमा किया है उनके लिए छूट होगी। स्वेच्छासे भेजना चाहें तो भेज सकते हैं।

जिन्हे सुविधा हो, वे रू. ५१ एक साथ भेजकर विपश्यना-पत्रिका के आजीवन - ग्राहक बन सकते हैं।

विशेष सूचना

मां सयामा के पति सया ऊ छि टिन ने पिछले दिनों इंगलैंड के "अन्तरराष्ट्रीय साधना केन्द्र" में कई शिविर संचालित किए। आगामी २ फरवरी की सुबह वे भारत आ रहे हैं और धम्मगिरी पर ४ से १५ फरवारी तक एक दस दिवसीय शिविर का संचालन करेंगे। जो लोग उनके मंगलमय सान्निध्य का लाभ लेना चाहें, इगतपुरी-व्यवस्थापक से संपर्क करके अपना स्थान सुरक्षित करा लें।

आगामी शिविर

सया ऊ छिट टिन द्वारा संचलित विशिष्ट शिविर : इगतपुरी (वि. वि. वि.) दि. ४-२-८१ से १५-२-८१ तक (अंग्रेजी)

शिविर क्रमांक : १९२ इगतपुरी (वि. वि. वि.) दि. १५-२-८१ से २६-२-८१ तक (अंग्रेजी)

* **संपर्क :** व्यवस्थापक, विपश्यना विश्व विद्यापीठ, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३ (नासिक, महाराष्ट्र) फोन नं. ७६

शिविर क्रमांक : १९३ काठमांडू (आनंद कुटी दायक सभा, नेपाल) दि. २५-३-८१ से ५-४-८१ तक (हिन्दी)

संपर्क : श्री मणिहर्ष ज्योति, ज्योति भवन, पो. बॉक्स नं. १३३, काठमांडू (नेपाल) फोन नं : ११४९०, ११२९० तार : हिमालआयरन

* **शिविर क्रमांक : १९४** इगतपुरी (वि. वि. वि. धम्मगिरि) दि. १०-५-८१ से २१-५-८१ तक (हिन्दी)

शिविर क्रमांक : १९५ जयपुर (विपश्यना केन्द्र, धम्मथली, गलताजी रोड) दि. २५-५-८१ से ५-६-८१ तक (हिन्दी)

संपर्क : श्री श्यामसुन्दर मुंदडा, जी-१/ए, अशोक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-३०२ ००१ (राज.) फोन-६३३२२/६५४१४ कार्या. तार-डॉली

सूचना : १) कृपया साधना शिविर में शामिल होने से पूर्व शिविर-व्यवस्थापक के पास अपना नाम रजिस्टर करा लें। **किसी कारणवश शिविर में सम्मिलित न हो सकते हों तो कृपया पर्याप्त समय रहते सूचित करें ताकि किसी अन्य प्रत्याशी को स्वीकृति दी जा सके।** २) अंग्रेजी शिविर में हिन्दी-प्रवचन सुनने लिए हिन्दी टेप की सुविधा उपलब्ध रहती है। ३) शिविरों के नियम कड़े होते हैं। उनका कड़ाई से पालन कर सकें तो ही भाग लेना चाहिए।

मेसर्स बस्तीराम नारायणदास सारडा
उंट बीड़ी निर्माता
नासिक-२
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

संतां की संगत सुखद, दुखद दुस्ट की होय।
वन्दन गुरुजन को सुखद, मंगलकारी होय॥
सतगुरु की संगत मिली, मिल्यो धरम को सार।
सम्प्रदाय के बोझको, उतरयो सिर सूं भार॥
सतगुरु की किरपा हुई, उबरत लगी न देर।
दुख दालद सारा मिट्या, मिल्यो रतन को ढेर॥
जदि सतगुरु तू राजपथ, देतो नहीं दिखाय।
तो जीवन भर भटकतो, आंधी गलियां मांय॥
तड़पत तड़पत प्यास सूं, प्राण जावता छूट।
जदि सतगुरु देतो नहीं, इमरत रस की घूंट॥
अहो भाग्य! गुरुदेव जू, प्रग्या दई जगाय।
दरसन बाद विबाद की, जकड़न दई छुड़ाय॥

दोहे धर्म के

शुद्ध धर्मका शांति पथ, सम्प्रदाय से दूर।
शुद्ध धर्मकी साधना, मंगल से भरपूर॥
सत्य धर्म को, कल्पना दूषित देय बनाय।
एक बूंद कांजी गिरे, मन भर पय फट जाय॥
रूप शब्द रस गंध में, सतत सघनता होय।
विपश्यना से बींध लें, तो ही विघटन होय॥
जहाँ जहाँ है सघनता, वहाँ मोह ही होय।
माया का विभ्रम चले, अहं प्रतिष्ठित होय॥
धर्म सरित निर्मल रहे, मैल न मिश्रित होय।
जन जन का होवे भला, जन जन मंगल होय॥
निर्मल निर्मल धर्म का, मंगल ही फल होय।
बंधन टूटें पाप के, मुक्ति दुखों से होय॥

सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक : **रामप्रताप यादव**, ग्रीन हाऊस, २ री मंजिल, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई २३. टेलीफोन : ३१३५१०. ● मुद्रण स्थान : अक्षरचित्र मुद्रणालय, सातपुर, नासिक ४२२ ००७. टेलिफोन ८८२५१ ●
पत्रिका में विज्ञापन दर : आधा पृष्ठ रू. ५००/-, चौथाई पृष्ठ रू. २५०/- ● वार्षिक शुल्क रू. ५/-, आजीवन शुल्क रू. ५१/-

विपश्यना"

Licence No. NS 18
Licensed to post without pre-payment

पो. रजि. नं. (M) NS (C) 36

प्रेषक :
सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट
विपश्यना विश्व विद्यापीठ
धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२ ४०३.
(नासिक, महाराष्ट्र)